टिप्पणी

27

भारतः जनसंख्या संघटन

पिछले पाठ में हमने भारत में जनसंख्या का वितरण, उसका घनत्व एवं उसकी वृद्धि के बारे में पढ़ा। जनसंख्या के वितरण एवं उसके घनत्व के कारणों तथा परिणामों से भी परिचित हो चुके हैं। पिछले एक सौ वर्षों में जनसंख्या में वृद्धि के कारणों एवं परिणामों पर भी चिन्तन किया गया। विभिन्न प्रकार के प्रवास के कारणों तथा परिणामों पर भी विचार व्यक्त किए गए। इस पाठ में कुछ निश्चित आयामों के सन्दर्भ में भारत की जनसंख्या के संघटनीय संरचना के बारे में अध्ययन करेंगे। सर्वप्रथम हम उन अधिवासों की स्थिति एवं आकार के बारे में जानने का प्रयास करेंगे तथा देखेंगे कि इन अधिवासों में लोग रहना क्यों पसन्द करते हैं। इस प्रकार के अधिवास दो प्रकार के ग्रामीण तथा शहरी होते हैं। इसके बाद हम यह जानने की कोशिश करेंगे कि जनसंख्या में पुरुष एवं महिलायें क्या बराबर संख्या में हैं। इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि इन दोनों की सामाजिक स्थितियां कैसी हैं हमारी जनसंख्या की आयु संघठनात्मक संरचना तथा इसकी जटिलताओं के बारे में जानने का प्रयास करेंगे। इन जानकारियों से अवगत होने के बाद हमारा ध्यान जनांकिकीय विवरणों से हटकर जनसंख्या के सामाजिक–सांस्कृतिक पहलुओं पर केन्द्रित होगा। यह हमारे समाज की भाषाई तथा धार्मिक संरचना को समझने में मदद करेगा। अन्त में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या, स्थिति एवं वितरण पर नजर डालेंगे। अन्तिम पर उतनी ही महत्वपूर्ण हमारे समाज की साक्षरता दर है तथा हमें इसके प्रमुख संघटकों से अवगत होना है। इन सभी पहलुओं का विश्लेषणात्मक विवरण मददगार होगा और यह दर्शायेगा कि हमारे देश की जनसंख्या महज गिनती की संख्या नहीं है, बल्कि यह मानव सम्पदा का परिचायक है।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात् आपः

- भारत की जनसंख्या में ग्रामीण–शहरी, पुरुष–स्त्री (लिंग अनुपात) तथा आयु संघटन का विश्लेषण कर सकेंगे;

टिप्पणी

- जनसंख्या वृद्धि दर तथा साक्षरता दर के बीच के संबंध को स्थापित कर सकेंगे;
- भारत के रेखा मानचित्र पर जनजातीय जनसंख्या के वितरण क्षेत्रों को दर्शा सकेंगे;
- देश के विशेष क्षेत्रों में अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या के केन्द्रीकरण का विश्लेषण कर सकेंगे;
- जिन क्षेत्रों में अनुसूचित जातियों का संकेन्द्रीकरण होता है, उन स्थानों में अनुसूचित जनजातियों की संख्या बहुत कम हो जाती है और ठीक इसके विपरीत स्थिति का कारण सहित विवरण दे सकेंगे;
- भारत की जनसंख्या में धार्मिक तथा भाषाई संरचना की महत्वपूर्ण विशिष्टताओं का वर्णन कर सकेंगे।

27.1 ग्रामीण शहरी संघटन

अधिवासों के आकार तथा वहाँ रहने वाले लोगों के व्यवसाय के आधार पर देश की जनसंख्या को दो बड़े वर्गों –ग्रामीण एवं शहरी में विभक्त करते हैं। ग्रामीण जनसंख्या छोटे–छोटे आकार के अधिवासों में ग्रामीण इलाकों में बिखरी रहती हैं। शहरी जनसंख्या बड़े आकार के अधिवासों जैसे बड़े–बड़े शहरों तथा नगरों में रहती है। यद्यपि इस वर्गीकरण का आधार मुख्यतः रहने वाले लोगों का व्यवसाय है। भारत में ग्रामीण क्षेत्र उन्हें कहा जाता है जहां तीन–चौथाई या इससे भी अधिक लोगों का प्राथमिक एवं प्रमुख व्यवसाय जैसे कृषि, पशुपालन, वानिकी, मत्स्य–ग्रहण, उत्खनन आदि हो। इसी तरह शहरी क्षेत्र में तीन–चौथाई या इससे भी अधिक लोग अकृषिगत व्यवसायों जैसे निर्माण उद्योग, व्यापार, यातायात, संचार, बैंकिंग एवं विविध सामाजिक सेवाओं जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा तथा प्रशासनिक आदि कार्यों में लगे रहते हैं।

सारिणी 27.1 भारत में ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या
(1901 से 2001 तक)

जनगणना वर्ष	कुल जनसंख्या का प्रतिशत	
	ग्रामीण	शहरी
1901	89.2	10.8
1911	89.7	10.3
1921	88.8	11.2
1931	88.0	12.0
1941	86.1	13.9
1951	82.7	17.3
1961	82.0	18.0

टिप्पणी

1971	80.1	19.9
1981	76.7	23.3
1991	74.3	25.7
2001	72.2	27.8

स्रोत–भारत की जनगणना

भारत की पूरी जनसंख्या 5.8 लाख गांवों तथा 4615 नगरों में फैली हुई है। प्रसिद्ध लोकोक्ति के अनुसार भारत को गांवों का देश कहा जाता है। आज भी करीब भारत की 72 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में ही बसती है। सारिणी 27.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रत्येक जनगणना में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत घटता रहा है। इसके परिणामस्वरूप नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत धीरे–धीरे परन्तु उत्तरोत्तर बढ़ा है। सन् 1901 में शहरी जनसंख्या 10.8 प्रतिशत थी जो धीरे–धीरे बढ़ते–बढ़ते 2001 में 27.8 प्रतिशत तक पहुंच गई। इसका मुख्य कारण शहरी जनसंख्या की वृद्धि दर ग्रामीण की तुलना में ज्यादा होना है। भारत की कुल जनसंख्या की औसत वृद्धि दर 21.34 प्रतिशत पाई गई जबकि शहरी जनसंख्या में वृद्धि दर 31.13 प्रतिशत हो गई। यह वृद्धि मात्र जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि दर का ही परिणाम नहीं है। वास्तव में यह वृद्धि ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्र में लोगों के प्रवास के कारण हुई है। पिछले पाठ में प्रवास के विभिन्न कारणों की विस्तार से चर्चा की जा चुकी है। प्रवास से आम जनता का रूझान धीरे–धीरे प्राथमिक व्यवसायों से हटकर द्वितीयक तथा तृतीयक व्यवसायों की ओर बढ़ने का भी संकेत मिलता है। अक्सर यह भी देखने में आता है कि नगरपालिका या नगरनिगम की सीमा का विस्तार बढ़ते–बढ़ते शहर के निकट ग्रामों या कस्बों को भी अपने दायरे में ले लेता है।

भारत की कुल नगरीय जनसंख्या का लगभग आधा भाग केवल पांच राज्यों में है। ये पांच राज्य हैं–महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल एवं आंध्र प्रदेश। मध्य प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, बिहार राजस्थान एवं केन्द्रशासित प्रदेश दिल्ली में देश की कुल नगरीय जनसंख्या का 32 प्रतिशत भाग बसता है। शेष 18 प्रतिशत शहरी जनसंख्या देश के बाकी राज्यों में तथा बचे केन्द्रशासित प्रदेशों में फैली हुई है।

जनगणना वर्ष 2001 के अनुसार भारत के 35 शहर ऐसे हैं जिनमें से प्रत्येक की जनसंख्या 10 लाख से अधिक है। इन बड़े शहरों या नगरों को महानगर (10 लाख से ज्यादा आबादी वाला नगर) कहते हैं। इन 35 महानगरों की कुल जनसंख्या भारत की कुल नगरीय जनसंख्या का 37.8 प्रतिशत है। एक अनुमान के अनुसार यदि यही प्रवृति कायम रही तो महानगरों की संख्या 2011 तक 50 के लगभग पहुंच जाएगी। तब शायद देश की कुल नगरीय जनसंख्या का आधा हिस्सा इन्हीं महानगरों में होगा। इन महानगरों के तेजी से बढ़ने के कारण कई समस्याएं भी सामने आएंगी जैसे रहने का मकान, बिजली, पेयजल आपूर्ति, स्कूल, स्वास्थ्य केन्द्र, राशन की दुकानें इत्यादि की समुचित व्यवस्था।

चित्र 27.1 भारत : महानगरों का वितरण (2001)

भारत में इन 35 महानगरों की स्थिति चित्र 27.1 पर दर्शायी गई है। जनसंख्या के घटते क्रम में इन महानगरों का क्रम इस प्रकार है—मुम्बई महानगर, कोलकाता, दिल्ली, चेन्नई, बंगलौर, हैदराबाद, अहमदाबाद, पुणे, सूरत, कानपुर, जयपुर, लखनऊ, नागपुर, पटना, इन्दौर, वड़ोदरा (बड़ौदा), भोपाल, कोयम्बटूर, लुधियाना, कोच्ची, विशाखापट्टनम, आगरा, वाराणसी, मदुरै, मेरठ, नासिक, जबलपुर, जमशेदपुर, आसनसोल, धनबाद, फरीदाबाद, इलाहाबाद, अमृतसर, विजयवाड़ा एवं राजकोट।

- भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 27.2 प्रतिशत भाग नगरीय क्षेत्रों में रहता है।
- भारत की कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का अनुपात लगातार तीव्रगति से बढ़ रहा है।

टिप्पणी

- देश में नगरीय जनसंख्या की वृद्धि दर ग्रामीण जनसंख्या की वृद्धि दर से अधिक है।
- प्रत्येक ऐसे नगर जिनकी जनसंख्या 10 लाख या इससे अधिक होती है, महानगर कहलाते हैं। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार देश में 35 महानगर हैं।

पाठगत प्रश्न 27.1

1. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों को भरिये–

   (द्वितीयक तथा तृतीयक, बढ़ रही है, 35, कम, प्राथमिक)

   (क) भारत में ग्रामीण जनसंख्या की वृद्धि दर नगरीय जनसंख्या की वृद्धि दर से _____ है।

   (ख) ग्रामीण जनसंख्या मुख्यतः _____ व्यवसाय में कार्यरत रहती है जबकि नगरीय जनसंख्या आमतौर पर _____ व्यवसायों में लगी रहती है।

   (ग) नगरीय जनसंख्या का अनुपात सन् 1921 से _____ रहा है।

   (घ) सन् 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में कुल _____ महानगर हैं।

27.2 लिंग-अनुपात

लिंग अनुपात से आशय है किसी क्षेत्र में प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या। इस प्रकार स्त्री–पुरुष की संख्या का लिंग अनुपात निकाला जाता है। भारत की सन् 2001 की जनगणना के अनुसार देश में प्रति हजार पुरुषों की तुलना में 933 महिलाएं हैं। इस प्रकार लिंग अनुपात प्रतिकूल कहा जाएगा, क्योंकि स्त्रियों की संख्या पुरुषों की संख्या से कम है।

लिंग अनुपात अनुकूल तब कहा जाता है जब स्त्रियों की संख्या पुरुषों की संख्या से अधिक हो। केरल में देश के अन्य राज्यों की तुलना में सबसे अधिक अनुकूल लिंग अनुपात (1058) है। इसी प्रकार सबसे अधिक प्रतिकूल अनुपात हरियाणा (861) में है। केन्द्रशासित प्रदेशों के बीच पांडिचेरी में सबसे अधिक अनुपात (1001) और दमन व दिव में सबसे कम अनुपात (709) है। देश में लिंग अनुपात के सम्बन्ध में सबसे अहम् बात यह है कि यह अनुपात लगातार घटता जा रहा है, यद्यपि अपवाद स्वरूप 1951, 1981 और अब 2001 में मामूली सी वृद्धि हुई है। सारिणी 27.2 में इसे और अधिक स्पष्ट किया गया है।

टिप्पणी

सारिणी 27.2 भारत में लिंग अनुपात (1901–2001) (प्रति हजार पुरुषों पर महिला संख्या)

जनगणना वर्ष	लिंग अनुपात
1901	972
1911	964
1921	955
1931	950
1941	945
1951	946
1961	941
1971	930
1981	934
1991	927
2001	933

स्रोत—भारत की जनगणना।

जिला स्तर पर प्रतिरूप

जिला स्तर के आंकड़ों पर नजर डालें तो एक बात स्पष्ट होती है कि भारत के कुल 593 जिलों में से 324 जिलों में यह अनुपात राष्ट्रीय औसत (933) से ज्यादा है तथा 4 जिलों में राष्ट्रीय औसत के बराबर है। अर्थात 593 जिलों में से 55 प्रतिशत जिलों में लिंग अनुपात राष्ट्रीय औसत से ज्यादा है। इन 55 प्रतिशत जिलों (324 जिले) के 78 जिले भारत के 16 राज्यों तथा केन्द्रशासित प्रदेशों में फैले हैं। वहां लिंग अनुपात का आंकलित मान एक से ऊपर है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि प्रति हजार पुरुषों की संख्या की तुलना में स्त्रियों की संख्या एक हजार से ज्यादा है। ऐसे जिलों की सबसे अधिक संख्या तमिलनाडु (15) में, इसके बाद केरल (13), उत्तराखण्ड (8), छत्तीसगढ़ (7), एवं उड़ीसा (7) जिले हैं। पांडिचेरी के माहे जिले में लिंगानुपात सबसे ज्यादा (1148) है। इसके बाद उत्तराखण्ड का अलमोड़ा (1147) जिला तथा महाराष्ट्र का रत्नागिरी (1135) जिला है। यदि इन आंकड़ों को स्थानीय वितरण पर देखें तो पता चलता है कि ऐसे तीन स्पष्ट भौगोलिक क्षेत्र हैं जहां लिंग अनुपात अनुकूल हैं। पहला क्षेत्र दक्षिण भारत है जिसके अन्तर्गत तमिलनाडु राज्य के अधिकांश जिले, पांडिचेरी, केरल के प्रायः सभी जिले तथा कर्नाटक के तटवर्ती जिले आते हैं। दूसरा क्षेत्र उड़ीसा, छत्तीसगढ़, आन्ध्र प्रदेश तथा मध्य प्रदेश के पहाड़ी एवं पठारी भूभाग है जो अनुसूचित जनजाति बहुल क्षेत्र है। तीसरा क्षेत्र उत्तराखण्ड तथा हिमाचल प्रदेश के पर्वतीय इलाके हैं।

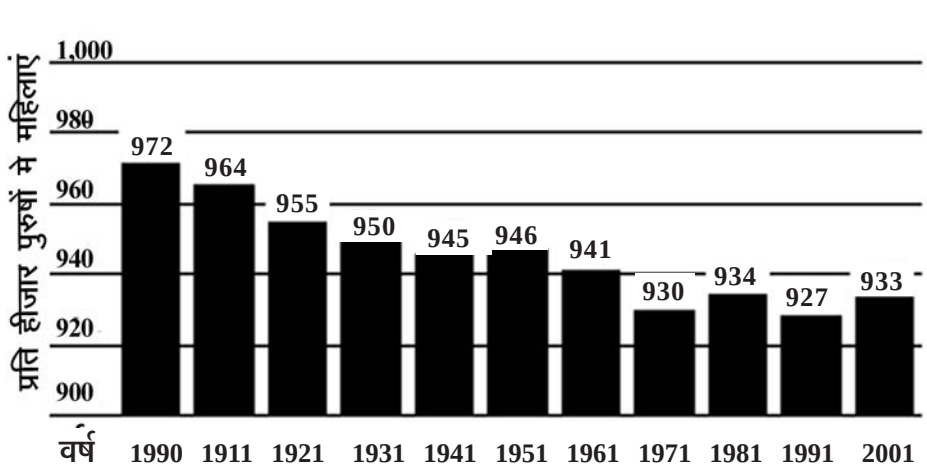

चित्र 27.2 भारत : लिंग अनुपात (1901-2001)

भारत के 265 जिलों में लिंग अनुपात राष्ट्रीय औसत से कम हैं। इन 265 जिलों में से 42 जिलों में यह अनुपात 850 से भी कम है। **ये जिले कहां और किन राज्यों में हैं?** उत्तर प्रदेश के 8 जिले तथा हरियाणा के 6 जिले इसके अंतर्गत आते हैं। वैसे इन 42 जिलों में से 10 जिले महानगरों में स्थित हैं। दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के अन्दर आने वाले 8 जिले हैं। मुम्बई महानगर तथा चण्डीगढ़ संघीय प्रदेश के एक-एक जिलों में काफी कम लिंगानुपात है। कम लिंगानुपात का मुख्य कारण उद्योगों, व्यवसायों, भवन निर्माण, अनौपचारिक विभागों एवं अव्यवस्थित कार्यों में बहुत अधिक संख्या में पुरुषों का रोजगार प्राप्ति हेतु प्रवास है। जिलों के सन्दर्भ में सबसे कम लिंग अनुपात दमन जिले में पाया गया (591), इसके बाद अरुणाचल प्रदेश के पश्चिमी कमेन्ग (749) तथा सिक्किम के उत्तरी जिले (752) आते हैं।

भारत में लिंग अनुपात में गिरावट क्यों? लिंग अनुपात में गिरावट के प्रमुख कारणों में स्त्रियों में प्रसव–पीड़ा के समय ज्यादा मृत्युदर तथा नवजात कन्या शिशुओं की मृत्यु दर बहुत अधिक होना है। इन दोनों कारणों का सीधा संबंध हमारे समाज में स्त्रियों के निम्न स्तर से है। इसके अलावा पुरुष प्रधान समाज में व्याप्त सामाजिक–धार्मिक मान्यताओं एवं विश्वास के कारण पुत्रों की प्राथमिकताएं लिंगानुपात कम होने के लिए जिम्मेदार है। इस मानसिकता का दुष्परिणाम कम होते लिंग अनुपात में परिलक्षित होता है। स्त्रियों का अल्पायु का शिकार होना तभी रूक सकता है जब उन्हें समाज में सम्मानजनक स्थान एवं पहचान मिले। इसके अलावा स्त्रियों को शिक्षा तथा समयानुकूल स्वास्थ्यवर्धक दवाएं, सेवाएं एवं पोषण मिलना जरूरी है। इससे प्रसव के समय एवं उपरान्त होने वाले नवजात शिशुओं की मृत्यु दर में कमी आएगी। साथ ही साथ प्रसव के समय स्त्रियों की मृत्यु दर में भी गिरावट आएगी।

- भारत में लिंग अनुपात प्रतिकूल है। औसतन प्रति हजार पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की संख्या 933 है। सबसे अधिक अनुपात केरल (1058) में तथा सबसे कम अनुपात (709) दमन व दिव में है।

टिप्पणी

टिप्पणी

- लिंग अनुपात में गिरावट के प्रमुख कारणों में नवजात कन्या शिशुओं की अधिक मुत्यु दर तथा समाज में स्त्रियों का निम्न स्तर है।

परियोजना कार्य

अपने पड़ोस में किन्हीं 20 परिवारों को चुनिये। प्रत्येक परिवार से सम्पर्क करें तथा यह जानने का प्रयास करें कि उसमें पुरुषों एवं महिलाओं की कुल संख्या कितनी है। सभी 20 परिवारों से सम्पर्क करने के पश्चात् महिलाओं एवं पुरुषों की संख्या को अलग–अलग जोड़िये। (1) यदि अनुपात 1:1 आता है तो लिंग अनुपात संतुलित कहा जायेगा। (2) यदि स्त्री का अनुपात एक से अधिक है तो लिंग अनुपात अनुकूल है अन्यथा प्रतिकूल होगा, यदि एक से कम हो तो। (3) यह जानने का प्रयास करें कि अनुकूल अथवा प्रतिकूल लिंग अनुपात के क्या कारण हैं? इसके लिए प्रत्येक परिवार का साक्षात्कार करें।

पाठगत प्रश्न 27.2

निम्न प्रश्नों का उत्तर संक्षेप में दीजिए:

(क) सबसे ज्यादा एवं अनुकूल लिंग अनुपात वाले राज्य का नाम बताइए।

_____

(ख) सबसे कम लिंग अनुपात वाले राज्य का नाम बताइये।

_____

(ग) भारत की जनगणना 2001 के अनुसार भारत का लिंग अनुपात क्या है?

_____

(घ) लिंग अनुपात को परिभाषित कीजिये

_____

27.3 आयु संरचना

आयु तथा लिंग पिरामिड लोगों की आयु एवं लिंग के अनुसार जनसंख्या की संरचना दिखाता है। यह जनसंख्या की वृद्धिदर तथा कार्यशील एवं आश्रितों की जनसंख्या का भी संकेत देता है। भारत की जनगणना 2001 के अनुसार 14 वर्ष तक के उम्र के बच्चे कुल जनसंख्या के 35.3 प्रतिशत हैं। इसी प्रकार 15-59 वर्ष के समूह में 56.9 प्रतिशत तथा वृद्ध (60 वर्ष एवं इससे अधिक) 7.4 प्रतिशत है। हाल के दशकों में भारत में आयु संरचना में धीरे–धीरे कुछ परिवर्तन हो रहे हैं।

टिप्पणी

इनमें से एक प्रवृत्ति है युवा वर्ग के हिस्से का बढ़ना, इनमें 0-14 आयु वर्ग का अनुपात घटता नजर आ रहा है तथा कार्यशील उम्र (15-59 वर्ष) तथा वृद्ध लोगों (60 वर्ष एवं उससे अधिक) का जनसंख्या में अनुपात बढ़ रहा है। किन्तु 2001 जनगणना के अनुसार, 1991 में कार्यशील (15-59 वर्ष) व्यक्ति 57.7 प्रतिशत थे जो घटकर 2001 में 56.9 प्रतिशत तक आ गया है। जबकि वृद्ध आयु वर्ग (60 वर्ष एवं अधिक) के लोग 1991 में 6.6 प्रतिशत थे जो 2001 में बढ़कर 7.4 प्रतिशत हो गए। इसी प्रकार 0-14 वर्ष के आयु वर्ग का अंश 1991 में 36.5 प्रतिशत था जो 2001 में घटकर 35.3 प्रतिशत हो गया है।

सारिणी 27.3 भारत में आयु तथा लिंग के अनुसार कुल जनसंख्या का प्रतिशत में वितरण (2001)

आयु वर्ग (वर्ष में)	कुल व्यक्ति	पुरुष	स्त्री
0-4	10.7	10.7	10.7
5-9	12.5	12.5	12.4
10-14	12.1	12.3	11.9
15-19	9.7	10.1	9.3
20-24	8.7	8.7	8.8
25-29	8.1	7.8	8.4
30-34	7.2	7.0	7.4
35-39	6.9	6.8	7.0
40-44	5.4	5.6	5.2
45-49	4.6	4.7	4.5
50-54	3.6	3.7	3.4
55-59	2.7	2.6	2.8
60-64	2.7	2.6	2.8
65-69	1.9	1.8	2.1
70-74	1.4	1.4	1.4
75-79	0.6	0.6	0.7
80 एवं अधिक	0.8	0.7	0.8

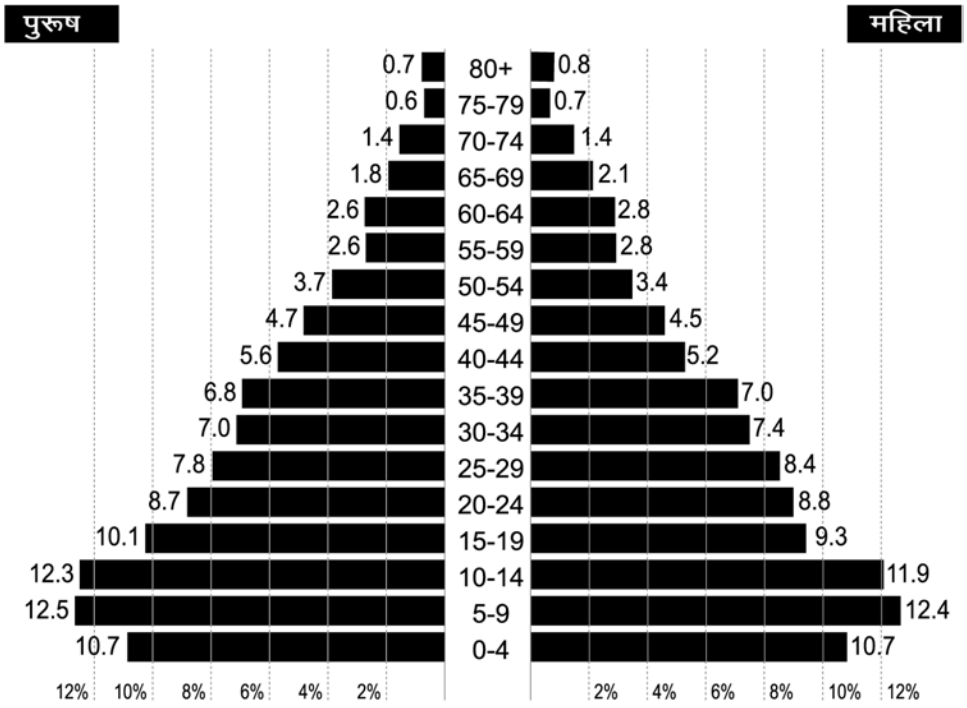

चित्र 27.3 भारतः आयु तथा लिंग संरचना (2001)

27.4 भाषाई संघटन

भारत में जिस प्रकार प्राकृतिक संरचना एवं पर्यावरण में भिन्नताएं हैं, ठीक उसी प्रकार से भारत में प्रचलित भाषाओं में भी विभिन्नताएं एवं विविधताएं मौजूद हैं। यहां सैकड़ों भाषाएं एवं स्थानीय बोलियों का प्रचलन पाया जाता है। सन् 1961 की जनगणना में 1652 भाषाओं को मातृभाषा के रूप में दर्जा दिया गया था। इनमें से केवल 23 भाषाओं को आपस में मिला दें तो ये देश की कुल जनसंख्या का 97 प्रतिशत हो जाता है। परन्तु ज्यादा लोगों द्वारा प्रयोग की जाने वाली इन 23 भाषाओं में से भारतीय संविधान में केवल 18 भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है। इसके अलावा संविधान की 8वीं सूची में अंग्रेजी को सम्पर्क भाषा के रूप में मान्यता दी गई है। इन 18 भाषाओं में असामी, बंगाली, हिन्दी, तेलुगू, तमिल, मलयालम, कन्नड़, मराठी, गुजराती, उड़िया, पंजाबी, कश्मीरी, संस्कृत, कोंकणी, सिंधी, नेपाली, मनीपुरी तथा उर्दू हैं। इन 18 भाषाओं में हिन्दी सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली जाती है जबकि सबसे कम लोगों

टिप्पणी

द्वारा संस्कृत बोली जाती है। विभिन्न शब्दों के अर्थ और उनके उच्चारण होने से भी भाषा में स्थानीय विविधता होती है। किसी एक विशेष भाषा बोलने वाले लोग ही दूसरे स्थान पर शब्दों के उच्चारण में थोड़े अन्तर के साथ उसी भाषा को बोलते हैं। भाषाओं में बोलने की विभिन्नताओं के कारण एक ही भाषा से कई 'बोलियों' का उद्भव होता है। इस प्रकार एक बोली (उपभाषा) किसी एक भाषा के सदृश्य ही होती है, जिसे क्षेत्रीय भाषा माना जा सकता है। राजस्थानी, हरियाणवी, भोजपुरी अथवा पूर्वी बोलियां हिन्दी भाषा की ही उपभाषाएं कहलाती हैं।

भाषा संस्कृति का एक महत्वपूर्ण घटक है तथा बहुत सी भाषाएं एवं उनकी उपभाषाएं या बोलियां भारत के विभिन्न भागों में बोली जाती हैं। ये भारत की संस्कृति को समृद्ध एवं विविध बनाती हैं। इसके साथ ही देश में भाषाएं अपनी प्रादेशिक पहचान भी बनाए रखती हैं। इसी कारण स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में प्रमुख भाषाओं के वितरण को आधार बनाकर राज्यों का पुनर्गठन किया गया। संख्यात्मक सामर्थ्य के आधार पर भारत को बारह प्रमुख भाषाई प्रदेशों में विभक्त किया जा सकता है। इस प्रकार एक भाषाई प्रदेश वह क्षेत्र कहलाता है जहां बहुसंख्यक लोग आमतौर पर उसी भाषा में बोलते हैं। भाषाई प्रदेशों के निर्धारण हेतु निम्न भाषाओं को चुना गया है—(1) कश्मीरी, (2) पंजाबी, (3) हिन्दी/उर्दू, (4) बंगला, (5) असमिया, (6) उड़िया, (7) गुजराती, (8) मराठी, (9) तमिल, (10) तेलुगू, (11) कन्नड़ तथा (12) मलयालम।

भारतीय भाषाओं का वर्गीकरण एवं वितरण

यद्यपि भारत की सभी भाषाएं बोलने में एक दूसरे से भिन्न नजर आती हैं, तथापि उनकी उत्पत्ति के आधार पर उन्हें चार प्रमुख भाषाई परिवारों में वर्गीकृत किया जा सकता है। ये भाषाई परिवार इस प्रकार हैं—(1) आस्ट्रिक परिवार (निषाद), (2) द्रविण परिवार (द्राविड़), (3) चीनी–तिब्बत परिवार (किरात) तथा (4) भारतीय–यूरोपीय परिवार (आर्य)।

आस्ट्रिक परिवार की भाषाएं मेघालय, अण्डमान–निकोबार द्वीपसमूह और मध्य भारत की जनजातीय पट्टी विशेष रूप से संथाल परगना, रांची और मयूरभंज जिलों में बोली जाती है। चीनी–तिब्बती परिवार की भाषाएं एवं उनकी उपभाषाएं देश के उत्तरी पूर्वी क्षेत्र तथा उत्तर एवं उत्तर–पश्चिम के उप-हिमालयी क्षेत्रों में बोली जाती हैं। ये भाषाएं लद्दाख (जम्मू तथा कश्मीर), हिमाचल प्रदेश तथा सिक्किम के कुछ भागों में बोली जाती है।

द्रविड़ परिवार की भाषाएं बोलने वालों की संख्या दक्षिण भारत में संकेन्द्रित है। तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक तथा केरल राज्य में अधिकांश लोगों द्वारा इस परिवार की भाषाएं बोली जाती हैं। प्रायद्वीपीय पठारी प्रदेश में रहने वाले जनजातीय लोगों द्वारा भी इस परिवार की भाषाएं बोली जाती हैं।

टिप्पणी

भारतीय–यूरोपीय परिवार की भाषाएं बोलने वाले लोग देश के उत्तरी मैदानी भागों तथा मध्य भारत में संकेन्द्रित है। सम्पूर्ण उत्तर भारतीय मैदान में फैला हुआ उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, बिहार, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात राज्यों में इसी परिवार की भाषाओं का उपयोग होता है।

भारत की कुल जनसंख्या में विभिन्न भाषाई परिवारों की भाषाएं बोलने वालों का अनुपात काफी भिन्नता दर्शाता है। जहां आर्य (भारतीय यूरोपीय परिवार) भाषाएं बोलने वालों का अनुपात 70 प्रतिशत से अधिक है, वहां चीनी–तिब्बती परिवार की भाषाएं बोलने वाले केवल 0.85 प्रतिशत है। द्रविण परिवार की भाषाएं बोलने वाले 20 प्रतिशत हैं।

- भारत में बोली जाने वाली भाषाएं चार प्रमुख परिवारों से संबंध रखती हैं। ये परिवार हैं– (1) आस्ट्रिक परिवार (2) द्रविड़ परिवार (3) चीनी–तिब्बती परिवार (4) भारतीय–युरोपीय परिवार।
- विभिन्न परिवारों से संबंधित भाषाओं का संकेन्द्रीकरण देश के विभिन्न भागों में हुआ है। आस्ट्रिक परिवार का देश के उत्तर–पूर्वी भाग में, द्रविण परिवार का दक्षिण भारत में, चीनी–तिब्बती परिवार की भाषाएं देश के उप–हिमालयी भागों में तथा भारतीय–यूरोपीय परिवार की भाषाएं देश के उत्तरी मैदानी भाग तथा मध्य भारत में संकेंद्रित है।
- भारतीय आर्य परिवार की भाषाएं भारत में सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली जाती हैं। चीनी–तिब्बती परिवार की भाषाएं बोलने वाले लोगों की संख्या सबसे कम है। भारत के 70 प्रतिशत से अधिक लोग भारतीय–आर्य परिवार की भाषाएं और बोलियां बोलते हैं।

पाठगत प्रश्न 27.3

कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द द्वारा रिक्त स्थानों भरिये–

(क) आस्ट्रिक भाषाई परिवार से संबंध रखने वाली भाषाओं में से एक भाषा _____ है (संथाली/हिन्दी/बंगला)

(ख) हिन्दी _____भाषाई परिवार से संबंधित भाषा है (द्रविड़/आर्य/आस्ट्रिक)

(ग) आस्ट्रिक भाषाएं बोलने वाले लोग मुख्यतया _____ में संकेंद्रित हैं। (उत्तर–पूर्व के जनजातीय क्षेत्र/पश्चिमी हिमालय/कोंकण प्रदेशों में)

टिप्पणी

27.5 धार्मिक संरचना

भारतीय समाज विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों में बंटा हुआ है। परन्तु, मोटे तौर पर सात प्रमुख धर्म हैं। अधिकांश लोग इन्हीं सात धर्मों में से किसी एक धर्म के अनुयायी होते हैं। ये सात धर्म हैं—हिन्दू, इस्लाम, ईसाई, जैन, बौद्ध, सिख और पारसी। हिन्दू धर्म के अनुयाइियों की संख्या भारत में सबसे ज्यादा है। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार 80.5 प्रतिशत लोग इस धर्म को मानते हैं। इस धर्म के माननेवालों की संख्या भारत के उत्तरी मैदानी भाग तथा मध्य भारत के पठारी प्रदेश के उत्तरी भाग में अधिक केन्द्रित हैं। इसके अलावा भारत के सभी भागों में इनकी संख्या पर्याप्त है। किन्तु इनकी संख्या भारत के कुछ उत्तर–पूर्वी क्षेत्रों में एवं संघीय प्रदेश लक्षद्वीप में नगण्य है।

अन्य धार्मिक समुदायों का भारत में वितरण बिखरा हुआ है। ये कुछ ही क्षेत्रों में संकेन्द्रित हैं। मुसलमानों की सर्वाधिक संख्या एवं कुल जनसंख्या में अनुपात जम्मू–कश्मीर एवं लक्षद्वीप में अधिक है। वैसे मुसलमानों की सबसे ज्यादा संख्या उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल तथा बिहार राज्यों में हैं। इन राज्यों के अलावा मुसलमानों की संख्या (राष्ट्रीय औसत से ज्यादा) असम तथा केरल में भी है। अगर क्षेत्रीय वितरण पर नजर दौड़ाएँ तो स्पष्ट होता है कि केरल तथा जम्मू–कश्मीर के अलावा इनका वितरण उत्तरी विशाल मैदानी भागों में ही है।

ईसाइयों का सबसे ज्यादा संकेन्द्रण केरल में है। इसके बाद तमिलनाडु एवं आन्ध्र प्रदेश का स्थान है। कुल जनसंख्या में उनका सबसे अधिक अनुपात उत्तर–पूर्वी राज्यों, खासकर मिजोरम, मेघालय एवं नागालैण्ड में है। जहां तक सिख धर्म के मानने वालों की संख्या का सवाल है, इनकी तीन चौथाई संख्या केवल पंजाब राज्य में संकेन्द्रित है। इसके अलावा सिखों की संख्या हरियाणा तथा राजस्थान के सीमावर्ती जिलों में भी है। उत्तराखण्ड के तराई क्षेत्रों तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में भी इनकी संख्या काफी है।

जहां तक बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म के अनुयाइयों की स्थिति का सवाल है, महाराष्ट्र राज्य ही ऐसा क्षेत्र है जहां दोनों धर्मों को मानने वालों की संख्या बहुत है। इसके अतिरिक्त परम्परागत रूप से जाना माना निवास जम्मू–कश्मीर का लद्दाख, हिमाचल प्रदेश में धर्मशाला (मैक्लि–योडगंज) एवं समीपवर्ती जिले सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश तथा त्रिपुरा राज्यों में है। इसी प्रकार महाराष्ट्र के अलावा जैन धर्म के अनुयाइयों की काफी संख्या राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश तथा छत्तीसगढ़ राज्यों में भी है। पारसी लोग वैसे भी बहुत ही कम संख्या में है जो महाराष्ट्र में मुम्बई तथा उसके आस–पास में ही पाये जाते हैं।

टिप्पणी

सारिणी 27.4 जनगणना 2001 में धर्मानुसार जनसंख्या

धार्मिक समूह	कुल जनसंख्या में प्रतिशत
हिन्दू	80.5
मुस्लिम	13.6
ईसाई	2.33
सिख	0.86
बौद्ध	0.76
जैन	0.40
अन्य	0.53

- जिन धर्मों को अधिकांश भारतीय मानते हैं, उनकी संख्या सात है। हिन्दुओं के सबसे बड़े समूह के बाद मुसलमान, सिख एवं इसाईयों के समुदाय हैं। विभिन्न धर्मों का संकेन्द्रण भारत के अलग–अलग भागों में है।

पाठगत प्रश्न 27.4

1. अधिकांश पारसी लोग भारत के किस भाग में रहते हैं?

   _____

2. भारत के अधिकतर ईसाई किन राज्यों में रहते हैं?

   _____

3. उस राज्य का नाम बताइये जहां पर मुसलमानों की जनसंख्या का सबसे अधिक संकेन्द्रण है।

   _____

4. अधिकांश भारतीय बौद्ध भारत के किस राज्य में निवास करते हैं?

   _____

27.6 अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों का संघटन एवं वितरण

भारत का संविधान बहुत सी जातियों एवं जनजातियों के समूह को मान्यता प्रदान करता है। इन्हें क्रमशः अनुसूचित जातियां तथा अनुसूचित जनजातियां के रूप में जाना जाता है। ये दोनों भारत की जनसंख्या के प्रमुख घटक हैं। भारत की जनगणना

टिप्पणी

2001 के अनुसार अनुसूचित जातियां तथा अनुसूचित जनजातियां भारत की कुल जनसंख्या के क्रमश 16 प्रतिशत तथा 8.2 प्रतिशत हैं। पूरे देश में इनका वितरण बहुत ही असमान एवं अनियमित है।

(क) अनुसूचित जातियां

संख्यात्मक रूप से इनका सबसे अधिक संकेन्द्रण उत्तर प्रदेश में है। इसके पश्चात् पश्चिम बंगाल एवं बिहार राज्य आते हैं। मिजोरम में अनुसूचित जाति के केवल 272 व्यक्ति हैं, जो प्रतिशत के हिसाब से नगण्य ही है। केन्द्रशासित प्रदेश लक्षद्वीप, अण्डमान–निकोबार द्वीपसमूहों में तथा नागालैण्ड राज्य में अनुसूचित जातियां है ही नहीं। कुल जनसंख्या में इनके प्रतिशत के आधार पर ये सबसे अधिक पंजाब में हैं जहाँ ये 28.85 प्रतिशत है। हिमाचल प्रदेश में इनका प्रतिशत 24.7 तथा पश्चिम बंगाल में 23.3 प्रतिशत है। अनुसूचित जातियां अधिकतर भूमिहीन खेतिहर मजदूर हैं। कुछ लोगों के पास बहुत कम कृषि भूमि है। ये छोटी–मोटी वस्तुओं के उत्पादक अथवा कारीगर हैं। कृषिगत कार्यकलापों से सम्बंध होने के कारण इनका सबसे अधिक संकेन्द्रण देश के जलोढ़ तथा तटीय मैदानों में पाया जाता है। यही कारण है कि इनका संकेन्द्रण पंजाब, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल एवं बिहार राज्यों में है। दूसरी तरफ मध्य तथा उत्तर–पूर्व भारत के पहाड़ी तथा वनीय इलाकों, जिनमें जनजातियों की संख्या बहुत है, में अनुसूचित जातियां बहुत कम संख्या में पाए जाते हैं।

जिला स्तरीय आंकड़ों के विश्लेषण करने पर निम्नलिखित तीन स्पष्ट क्षेत्र दृष्टिगत होते हैं–

(i) अधिक संकेन्द्रण के क्षेत्र–अनुसूचित जातियों के संकेन्द्रण के दो प्रमुख क्षेत्र हैं। ये सिंधु–गंगा मैदान तथा पूर्वी तटीय मैदान है। इन दानों मैदानी क्षेत्रों में उपजाऊ मिट्टी, पर्याप्त जल आपूर्ति तथा बहुत सी फसलों के उत्पादन के लिए उपयुक्त जलवायु है। इन सुविधाओं के कारण सघन कृषि का विकास हुआ।

(ii) मध्यम संकेन्द्रण के क्षेत्र–अधिक संकेन्द्रण के क्षेत्र के निकटवर्ती जिलों में अनुसूचित जातियों का संकेन्द्रण मध्यम है।

(iii) निम्न संकेन्द्रण के क्षेत्र–यह क्षेत्र मध्य विन्ध्य, छोटानागपुर का भाग, राजस्थान के पश्चिमी शुष्क क्षेत्र, उत्तर पूर्वी भारत के पहाड़ी क्षेत्र तथा कर्नाटक एवं महाराष्ट्र के समुद्री तटवर्ती भागों में हैं।

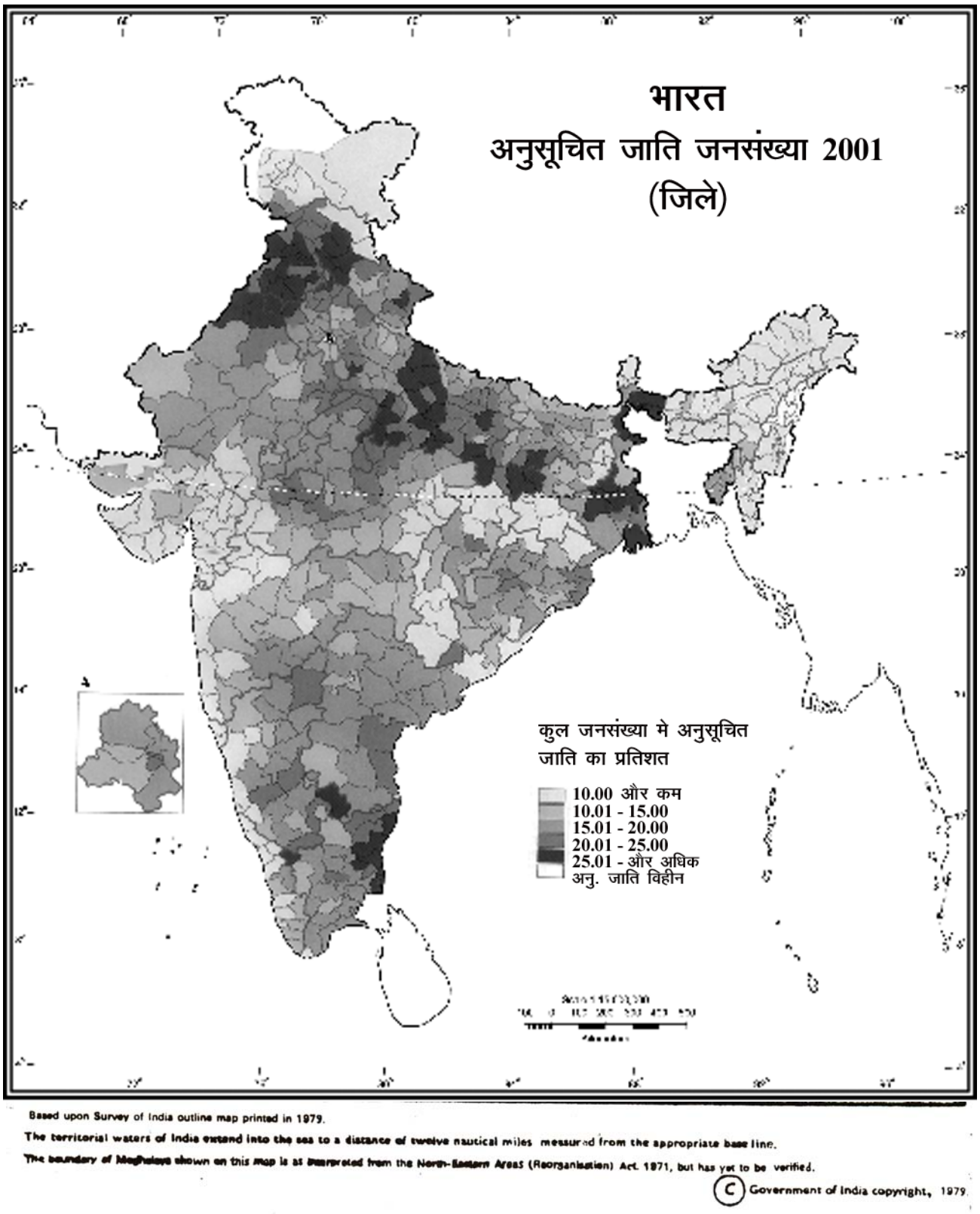

चित्र 27.4 अनुसूचित जाति जनसंख्या का वितरण 2001

टिप्पणी

(ख) अनुसूचित जनजातियां

अनुसूचित जनजातियों के कुछ विशिष्ट लक्षण होते हैं जो उन्हें अन्य लोगों से भिन्न पहचान बनाने में सहायक होते हैं। साधारणतया ये एकान्तप्रिय जीवन बिताना पसन्द करते हैं। इसलिये ये प्रायः वनाच्छादित तथा पर्वतीय क्षेत्रों में निवास करते हैं। ये जनजातियां अत्यन्त पुरानी धार्मिक धारणाओं का पालन करती हैं। इन जातियों के अधिकतर समुदाय अशिक्षित हैं। इन जनजातियों की कोई लिपिबद्ध भाषा नहीं है। इन जनजातियों के अधिकांश लोग अलौकिक शक्तियों एवं धारणाओं में अटूट आस्था रखते हैं।

अनुसूचित जनजातियों का वितरण एवं विस्तार देश में एक समान नहीं है। इनकी आबादी कहीं घनी है तो कहीं विरल। देश में तीन ऐसे क्षेत्र हैं जहां इनकी आबादी अपेक्षाकृत संकेन्द्रित है। ये क्षेत्र—(i) मध्य भारत की पेटी जिसमें राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीगसढ़, झारखण्ड, उड़ीसा तथा पश्चिम बंगाल के भाग, (ii) उत्तर–पूर्वी क्षेत्र जिसमें असम, मेघालय,मणिपुर, मिजोरम, नागालैण्ड, त्रिपुरा एवं अरुणाचल प्रदेश के पर्वतीय भाग तथा (iii) दक्षिण भारत के क्षेत्र जिसके अन्तर्गत तमिलनाडु तथा आन्ध्र प्रदेश के पर्वतीय इलाके और अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह सम्मिलित है।

उपरोक्त चर्चाओं तथा भारत के मानचित्र पर दर्शाए गए वितरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत की अनुसूचित जनजातियां खास क्षेत्रों में ही पाई जाती हैं। मानचित्र में दर्शाए वितरण से स्पष्ट है कि ये जनजातियाँ वनाच्छादित पर्वतीय क्षेत्रों में हैं, जहां कृषि उत्पादकता बहुत ही कम होती है, साथ ही इन क्षेत्रों में प्रायः प्राकृतिक विपदाएं एवं विषमताएं घनीभूत होती हैं। इन क्षेत्रों में आर्थिक–विकास की सीमित संभावनाओं के रहते आर्थिक स्तर भी नीचा ही है। इन क्षेत्रों में यातायात एवं संचार व्यवस्था क्षीण एवं समस्यायुक्त है। इन क्षेत्रों में उपलब्ध प्राकृतिक सम्पदाओं का उचित दोहन भी नहीं हो पाता है।

प्रायः ऐसी धारणा प्रचलित है कि उन क्षेत्रों का आर्थिक विकास इसलिए नहीं हो पाता क्योंकि वहां जनजातियां निवास करती हैं। वस्तुतः यह एक गलत धारणा है। इन क्षेत्रों में आर्थिक विकास के कम होने का कारण सम्भाव्य साधनों का सीमित होना, परिवहन के साधनों का अभाव तथा प्राकृतिक परिवेष एवं पर्यावरण इतने दुरुह है कि किसी भी प्रकार के आर्थिक विकास दुष्कर एवं दुविधायुक्त होते हैं। इसके बावजूद भी अनुसूचित जनजातियां ऐसे प्रतिकूल पर्यावरण तथा प्राकृतिक प्रकोपयुक्त क्षेत्रों को अपना निवास क्षेत्र बनाये हुए हैं।

वास्तव में वनवासी जनजातियां ऐसी बसावट स्वेच्छा से नहीं चुनते हैं। इन्हें आधुनिक सभ्यता के प्रसार–विस्तार ने प्रतिकूल क्षेत्रों में जाने को विवश किया है। देश के प्रारंभिक अधिवासी निरंतर आक्रमणकारियों अथवा प्रवासियों के दबाव में नवागन्तुक आक्रान्ताओं से युद्ध में हारकर अथवा डरकर एकान्त एवं बीहड़ स्थानों

में चले गए। वर्तमान में पाई जाने वाली अनूसूचित जनजातियां वर्षों से चली आ रही परंपराओं तथा पीढ़ी–दर–पीढ़ी अपने पूर्वजों के द्वारा बनाई व्यवस्था एवं व्यवहार का निर्वाह करते आ रहे हैं।

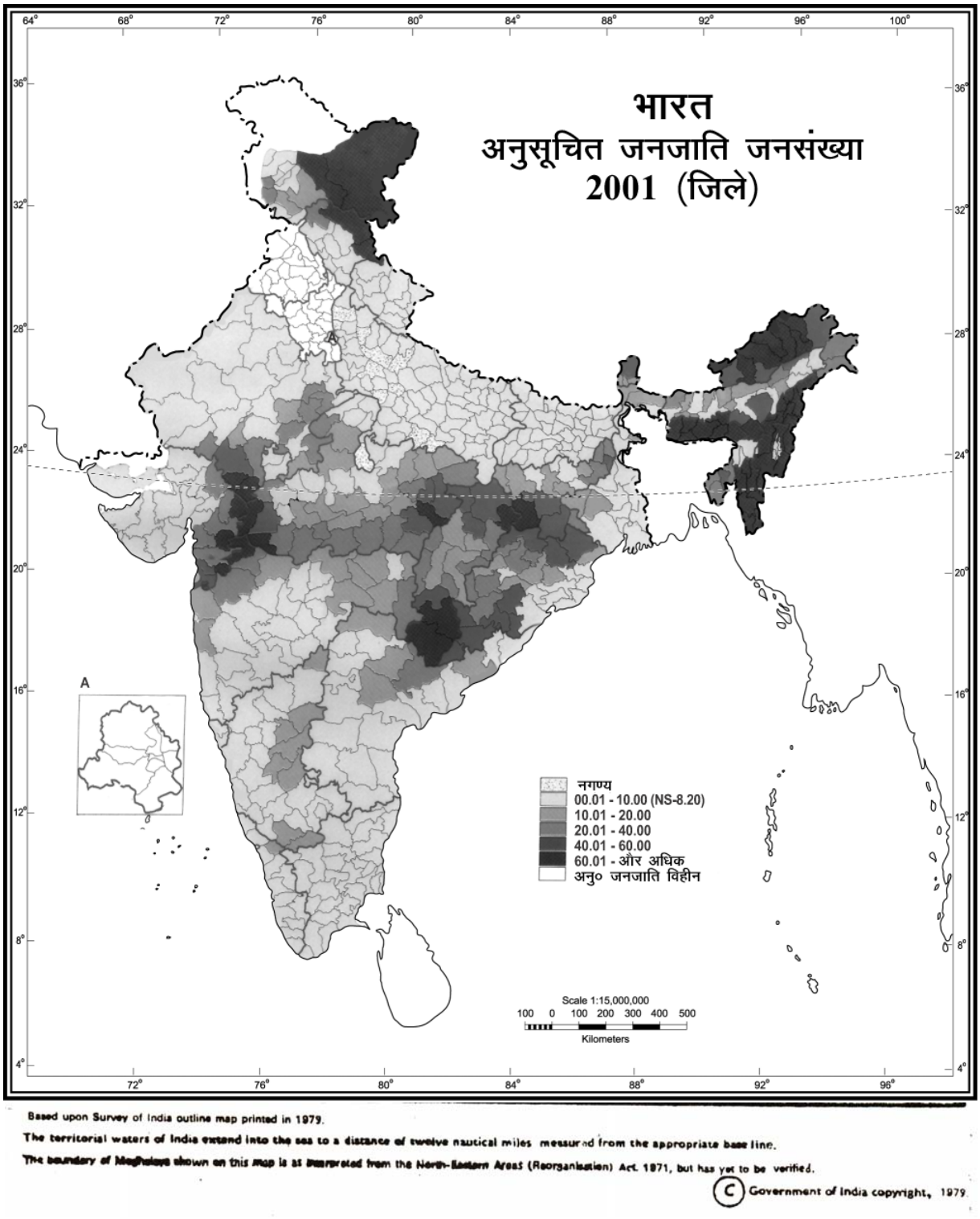

चित्र 27.5 अनुसूचित जनजाति जनसंख्या का वितरण 2001

टिप्पणी

जिला स्तरीय प्रतिरूप

अनुसूचित जातियों के समान, जिला स्तर पर इनके वितरण का प्रारूप तीन स्तरों में पाया जाता है। ये हैं (i) जनजातियों का उच्च–स्तरीय संकेन्द्रण, (ii) मध्यम संकेन्द्रण तथा (iii) कम संकेन्द्रण का क्षेत्र है।

(i) उच्च-स्तरीय संकेन्द्रण के क्षेत्र

देश के कुल 40 जिले ऐसे हैं जिनमें अनुसूचित जनजातियां प्रबल एवं प्रधान रूप से पायी जाती हैं। इन 40 जिलों में से प्रत्येक जिले में जनजातीय जनसंख्या का अनुपात कुल जनसंख्या की तुलना में 75 प्रतिशत से 98 प्रतिशत तक पाया जाता है। उनमें से 8 जिले मिजोरम में, नागालैण्ड एवं मेघालय राज्यों में प्रत्येक में 7 जिले, 6 जिले अरुणाचल प्रदेश में तथा 5 जिले मणिपुर में है। शेष 7 जिले चार राज्यों–जम्मू व कश्मीर, गुजरात, मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ राज्यों से हैं। मिजोरम राज्य के सिरछिप जिले में देश की सबसे अधिक अनुसूचित जनजातियों का संकेन्द्रण 98.09 प्रतिशत पाया जाता है, इसके बाद मेघालय राज्य के पश्चिमी खासी पर्वतीय जिला में 98.02 प्रतिशत मिलता है।

(ii) मध्यम-स्तरीय संकेन्द्रण के क्षेत्र–इन क्षेत्रों में जनजातियों की संख्या 25 प्रतिशत से 75 प्रतिशत के बीच पायी जाती है। यह क्षेत्र देश के 17 राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों में है। इस वर्ग में आने वाले 85 जिले हैं। स्थानिक विस्तार के अनुसार बड़ी आबादी वाले क्षेत्र मध्य प्रदेश (14 जिले), उड़ीसा (14 जिले), छत्तीसगढ़ (10 जिले), झारखण्ड (8 जिले), अरुणाचल प्रदेश (7 जिले) तथा गुजरात (7 जिले) हैं।

(iii) निम्न-स्तरीय संकेन्द्रण के क्षेत्र–इस क्षेत्र में जनजातियों का प्रतिशत 5 से 25 के बीच होता है। इतने प्रतिशत आबादी की सीमा वाले 140 जिले हैं। ये देश के 18 राज्यों/संघीय प्रदेशों में है। स्थानिक रूप से ऐसी संरचना वाले 18 जिले मध्य प्रदेश में है। इनकी संख्या महाराष्ट्र में 17 जिले, राजस्थान में 17 जिले, कर्नाटक में 14 जिले, असम में 13 जिले, आन्ध्र प्रदेश में 10 जिले, पश्चिम बंगाल में 10 जिले, उड़ीसा में 10 जिले, झारखण्ड में 8 जिले, जम्मू व कश्मीर में 9 जिले तथा छत्तीसगढ़ में 5 जिले हैं। शेष बिखरे हुए हैं जिनकी संख्या गुजरात में 3 जिले, सिक्किम में 3 जिले, उत्तराखण्ड में 2 जिले तथा मणिपुर, केरल, दमन व दिव एवं बिहार में 1–1 जिले हैं।

इसके अलावा जनजातियों के संकेन्द्रण (0.5 से 5.0 प्रतिशत जनसंख्या) वाले 143 जिले भी हैं जो देश के 18 राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों के अन्तर्गत स्थित हैं।

27.7 साक्षरता

आमतौर पर साक्षरता का अर्थ किसी व्यक्ति की पढ़ने, लिखने तथा समझने एवं सामान्य गणना करने की क्षमता से लिया जाता है। इतनी उदार तथा सरल परिभाषा

टिप्पणी

के बावजूद देश में साक्षरता की दर ऊँची नहीं है। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में साक्षरता की दर 65.38 प्रतिशत ही है। इस प्रतिशत में 7 वर्ष से कम उम्र के बच्चों की संख्या शामिल नहीं है।

देश के एक भाग से लेकर दूसरे भाग तक साक्षरता में भिन्नताएं दृष्टिगत होती हैं। एक तरफ केरल राज्य में साक्षरता की दर 90.92 प्रतिशत तक पहुंच गई है तो दूसरी तरफ बिहार राज्य में साक्षरता की दर 47.53 प्रतिशत ही है। केन्द्रशासित प्रदेशों में सबसे ऊंची साक्षरता दर लक्षद्वीप में 87.52 प्रतिशत तक पहुंच चुकी है तो दादर और नगर हवेली में साक्षरता दर 60.03 प्रतिशत ही है।

साक्षरता की दर का अन्तर स्त्री–पुरुषों के बीच में भी बहुत अधिक है। पुरुषों में औसत साक्षरता का प्रतिशत जहां 75.85 तक है वहीं स्त्रियों में यह प्रतिशत 54.16 ही है। परन्तु केरल देश का ऐसा राज्य है जहां साक्षरता की दर पुरुषों (94.20 प्रतिशत) तथा स्त्रियों दोनों में ही ऊँची (87.86 प्रतिशत) पाई गई है। वहीं बिहार में पुरुषों की साक्षरता दर 60.32 प्रतिशत है तथा स्त्रियों की साक्षरता दर 33.57 प्रतिशत है। यह दर पुरुषों एवं स्त्रियों दोनों में ही कम है। इसी प्रकार साक्षरता दर शहरी इलाकों में जहां 73.01 प्रतिशत है वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता की दर मात्र 44.54 प्रतिशत ही है।

यद्यपि भारत में साक्षरता की दर नीचे है, परन्तु प्रत्येक जनगणना वर्षों में इसमें उत्तरोत्तर वृद्धि होती रही है। सन् 1911 में साक्षरता दर 6 प्रतिशत से भी कम थी किन्तु यह धीरे–धीरे बढ़कर 1951 में 16.7 प्रतिशत हो गई। वास्तव में साक्षरता की दर में वृद्धि 1951 की जनगणना के बाद के दशकों में हुई। सन् 1961 में यह 24 प्रतिशत हो गई तथा बाद में बढ़कर 2001 में 65.38 प्रतिशत तक हो गई। इस प्रगति में सबसे महत्वपूर्ण तथ्य स्त्रियों की साक्षरता की दर का तेजी से वृद्धि रही। देश की कुल स्त्रियों की संख्या का मात्र 1.1 प्रतिशत ही सन् 1911 में साक्षर था जो सन् 2001 में बढ़कर 54.66 प्रतिशत हो गया। बहुत हद तक इस वृद्धि का श्रेय भारत में केन्द्र एवं राज्य सरकारों की शिक्षा नीतियों को खासकर प्राथमिक शिक्षा के सर्वव्यापीकरण के प्रयासों को जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों के दूरदराज के स्थानों में स्कूलों की सुविधा उपलब्ध कराने से साक्षरता दर तो बढ़ी ही है, साथ में बालिकाओं (स्त्रियों में) की साक्षरता दर में भी अभिवृद्धि हुई।

यद्यपि साक्षरता की दर में प्रतिशत की दृष्टि से प्रत्येक गणना के दशक में वृद्धि दर्ज होती रही है, पर इसके साथ–साथ निरक्षर व्यक्तियों की कुल संख्या में भी वृद्धि होती रही है। सन् 1991 से सन् 2001 के बीच के दशक में पहली बार अशिक्षितों की संख्या में पिछले जनगणना दशकों के मुकाबले में प्रभावी रूप से कमी आई है। इसके बाद भी अशिक्षितों की संख्या आज भी काफी है। इस समस्या से निजात पाने के लिए सरकार ने कई प्रयासों को आरंभ किया है, जैसे राष्ट्रीय साक्षरता मिशन, सर्व शिक्षा अभियान इत्यादि।

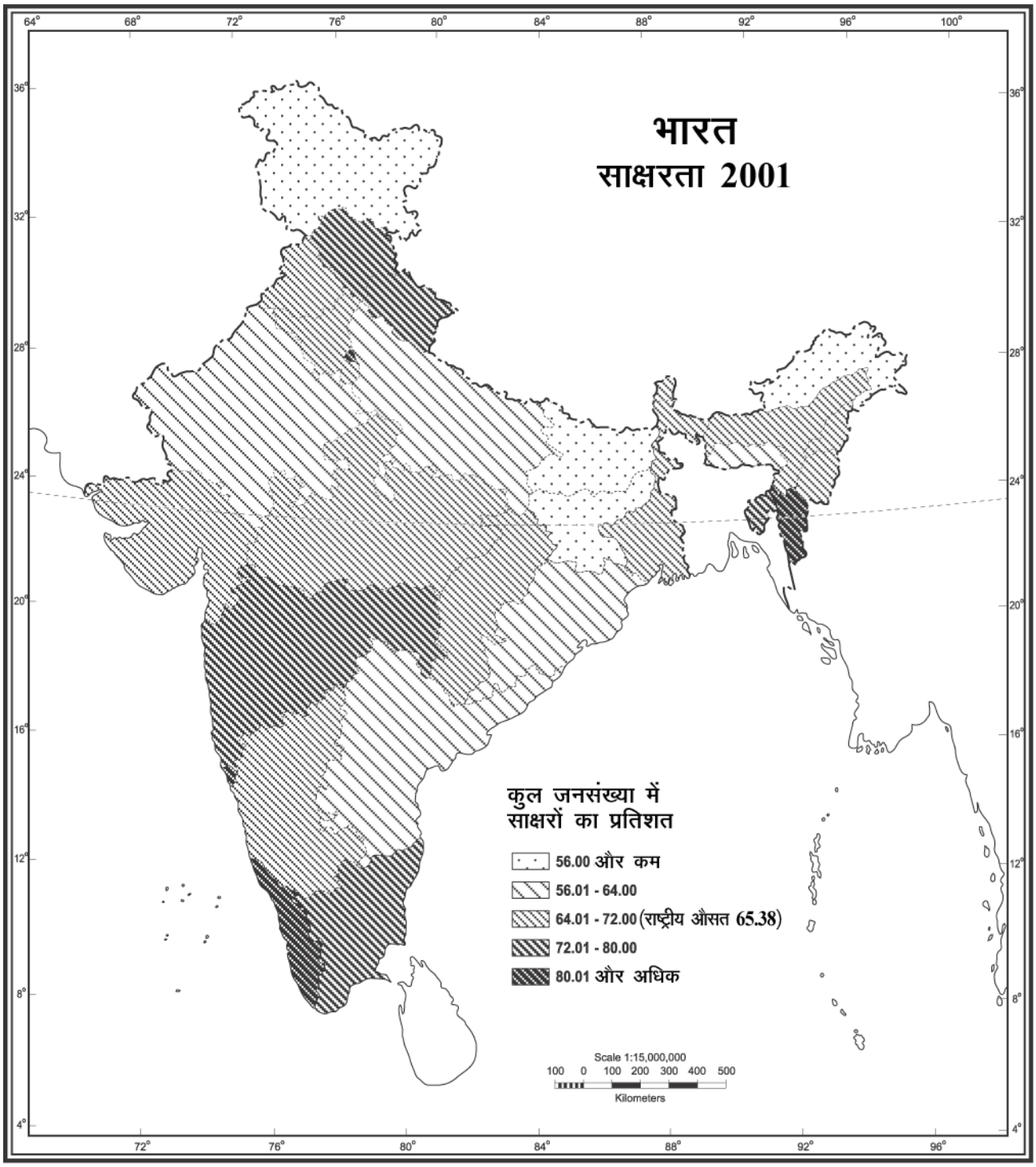

Based upon Survey of India Outline Map printed in 1990
The territorial waters of India extened into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the aporopriate base line.
The boundary of Meghalaya shown of this map is as interpreted from the North-Eastern Areas (Reorganisation) Act, 1971, but has yet to be verified
Responsibility for correctness of internal details shown on the map rests with the publisher.

© Government of India copyright, 1996

चित्र 27.6 भारतः साक्षरता का प्रादेशिक वितरण 2001

टिप्पणी

साक्षरता का जिला स्तरीय प्रतिरूप

जिला स्तरीय आंकड़ों का विश्लेषण यह दर्शाता है, कि साक्षरता दर में भिन्नता 96.64 प्रतिशत आइजाल जिला (मिजोरम) से लेकर 30.01 प्रतिशत दन्तेवाड़ा जिला (छत्तीसगढ़) तक पाई गई है। देश के 591 जिलों में साक्षरता दर की दृष्टि से 59 जिलों में साक्षरता दर 80 प्रतिशत से ज्यादा है। इनमें से अधिकांश जिले भारत के दक्षिणी राज्यों में हैं। इसके अंतर्गत केरल के कुल 14 जिलों के साथ तमिलनाडु के 4 जिले, पाण्डिचेरी के 3 जिले, कर्नाटक के 2 जिले तथा लक्षद्वीप एवं अण्डमान तथा निकोबार के एक–एक जिले आते हैं। दक्षिण भारत के अलावा उत्तर–पूर्वी भारतीय क्षेत्र में 10 जिले स्थित हैं। इनमें से 7 जिले मिजोरम, 2 जिले नागालैण्ड तथा एक जिला मणिपुर में है। पश्चिमी भारत में 11 जिले है जिनमें से महाराष्ट्र के 9 जिले आते हैं। उत्तरी भारत में 11 जिले आते हैं जिनमें से 6 जिले 'राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र' दिल्ली के अन्तर्गत स्थित हैं। बाकी 5 जिलों में से 3 जिले हिमाचल प्रदेश एवं एक–एक जिला चण्डीगढ़ एवं उत्तराखंड राज्यों में स्थित है। पूर्वी भारत में एक जिला पश्चिम बंगाल तथा एक जिला उड़ीसा राज्य में है। मध्य भारत क्षेत्र में इस श्रेणी का एक भी जिला नहीं है।

इसके विपरीत देश में 26 जिले ऐसे हैं जिनमें साक्षरता की दर 40 प्रतिशत से भी कम है। ये जिले भारत के 7 राज्यों में बिखरे हुए हैं। बिहार राज्य में 11 जिले, उत्तर प्रदेश में 5 जिले, उड़ीसा में 4 जिले, झारखण्ड में 3 जिले तथा छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, जम्मू–कश्मीर राज्यों में एक–एक जिला है।

- ऐसा व्यक्ति जो किसी भी एक भाषा में सही समझ के साथ लिख–पढ़ सकता है, साक्षर कहा जाता है।
- भारत की जनगणना 2001 के अनुसार साक्षरता की दर 65.38 प्रतिशत है।
- भारत में सर्वोच्च साक्षरता की दर केरल राज्य (90.92 प्रतिशत) में है तथा सबसे कम बिहार राज्य (47.53 प्रतिशत) में है।
- साक्षरता की दर स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों में अधिक है। इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों में अधिक है।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से लगातार तीव्र गति से साक्षरता की दर में वृद्धि हो रही है।

पाठगत प्रश्न 27.5

1. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर निम्न स्थानों को भरिए–

   (क) भारत के बहुत अधिक संकेन्द्रण वाले जनजातीय क्षेत्र _____ है। (पंजाब/हरियाणा/झारखण्ड)

टिप्पणी

(ख) भारत की जनगणना 2001 के अनुसार अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का भारत की कुल जनसंख्या की तुलना में करीब _____ प्रतिशत है। (16, 15, 8, 7)

(ग) जिस राज्य में अनुसूचित जातियों की जनसंख्या उस राज्य की कुल जनसंख्या का बहुत बड़ा एवं महत्वपूर्ण भाग है, वह राज्य है _____। (उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब)

(घ) भारत की जनगणना 2001 के अनुसार देश की औसत साक्षरता दर _____ प्रतिशत है। (65, 38, 64.44, 68.01)

2. किन्हीं दो कार्यक्रमों के नाम लिखिये, जिन्हें भारत सरकार ने साक्षरता दर को बढ़ाने के लिए शुरू किया।

(क) _____ (ख) _____

3. किस राज्य में स्त्री एवं पुरुष दोनों की साक्षरता सर्वोच्च पाई जाती है?

_____

आपने क्या सीखा

किसी देश का विकास उसके मानव संसाधनों की गुणवत्ता एवं संख्या पर निर्भर करता है। मानव संसाधनों की गुणवत्ता उसकी जनसंख्या की संगठनात्मक संरचना पर निर्भर करती है। ये संरचनाएं ग्रामीण–शहरी, लिंग, आयु, भाषाई, धार्मिक, अनुसूचित जातियां एवं जनजातियां, साक्षरता–निरक्षरता है।

प्रचलित लोकोक्ति के अनुसार भारत को गांवों का देश माना जाता है। आज भी देश की करीब 72 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या गांवों में ही बसती है। शहरीकरण की रफ्तार देश में तेजी से बढ़ रही है। नगरीय जनसंख्या की वृद्धि दर पूरे देश की जनसंख्या की औसत वृद्धि दर से अधिक है। इसका प्रमुख कारण ग्राम वासियों का अधिक संख्या में शहरी प्रवास है। देश में कुल 35 महानगर हैं। प्रत्येक की जनसंख्या दस लाख से अधिक है।

देश में लिंग अनुपात प्रतिकूल है। सबसे अधिक महिलाओं की संख्या प्रति हजार पुरुषों पर केरल राज्य (1058) दर्ज की गई। जबकि सबसे कम संख्या (861 स्त्री प्रति हजार पुरुष पर) हरियाणा राज्य में दर्ज की गई। यदि संघीय प्रदेशों को इस विश्लेषण में शामिल करें तो सबसे कम लिंग अनुपात दमन और दिव (709) में हैं। लिंग अनुपात प्रत्येक जनगणना वर्षों में घटता आ रहा है यद्यपि कुछ एक जनगणना वर्षों में जैसे 1951, 1981 एवं 2001 में आंशिक वृद्धि दर्ज हुई है। आप अपने इलाके

टिप्पणी

में भी इस लिंग अनुपात की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिये आपको एक छोटा सा परियोजना कार्य अपनाना होगा।

भारत में साक्षरता की दर कोई विशेष ऊंची नहीं है। यह करीब 65.38 प्रतिशत है। साक्षरता की सबसे अधिक दर (90.92 प्रतिशत) केरल में है जबकि इसके विपरीत बिहार में सबसे कम (47.53 प्रतिशत) दर्ज है।

भारत देश सामाजिक विविधताओं का विशाल क्षेत्र है। यह विभिन्न जाति–समूह, भाषाई एवं धर्मावलम्बियों का विशाल निवास स्थान है। आदिम जनजाति के लोग भारत के मूल नस्ल के लोगों के सबसे नजदीकी संबंधियों में आते हैं। अनुसूचित जातियां विभिन्न नस्ल समूहों के पारस्परिक मिलन के परिणाम स्वरूप हुई। 2001 की जनगणना के अनुसार अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों का अनुपात क्रमशः 16 प्रतिशत तथा 8.20 प्रतिशत है। अनुसूचित जातियों का संकेन्द्रण भारत के उत्तरी मैदानी इलाकों में उनके व्यावसायिक कुलशलता के अनुसार मिलता है। अनुसूचित जनजातियां सामान्यतया निर्जन, वनाच्छादित तथा पहाड़ी बीहड़ पट्टियों में निवास करती हैं। ये लोग औद्योगिक विकास की प्रारम्भिक अवस्था में हैं। ये प्राकृतिक एवं पराशक्तियों में अविचल आस्था रखते हैं।

भारत देश भाषा एवं धर्म की दृष्टि से अद्भुत एवं अद्वितीय है। यहां विश्व के सभी धमों को मानने वाले लोगों का सौहार्द्रपूर्ण जमघट है। इस देश में 18 प्रमुख भाषाएं तथा सैकड़ों बोलियां बोलने वाले लोग निवास करते हैं।

पाठान्त प्रश्न

1. भारत की जनसंख्या की निम्नलिखित विशेषताओं पर संक्षेप में चर्चा कीजिये।

   (क) आयु संरचना, (ख) ग्रामीण नगरीय अनुपात, (ग) लैंगिक अनुपात।

2. भारत में साक्षरता का विवरण दीजिए।

3. लिंग अनुपात के घटने के लिए कौन से कारक उत्तरदायी हैं? संक्षेप में चर्चा कीजिये?

4. भारत में जनजातीय जनसंख्या के प्रादेशिक वितरण पर चर्चा कीजिये।

5. अधिकतर भारतीय भाषाएं किस भाषाई–परिवार से संबंधित हैं? भारत में विभिन्न भाषाई परिवारों के वितरण का संक्षेप में वर्णन कीजिये।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

27.1

(क) नीचे, (ख) प्राथमिक; माध्यमिक एवं तृतीयक, (ग) बढ़ रही है (घ) 35

27.2

(क) केरल, (ख) हरियाणा, (ग) 933, (घ) इसका संबंध प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या से है।

27.3

(क) सन्थाली (ख) आर्य (ग) मध्य भारत के आदिवासी जनजातीय क्षेत्र

27.4

1. मुम्बई और उसके आसपास के क्षेत्रों में।
2. तमिलनाडु, केरल, आन्ध्र प्रदेश एवं उत्तर–पूर्व क्षेत्र
3. उत्तर प्रदेश
4. महाराष्ट्र एवं अरुणाचल प्रदेश

27.5

1. (क) झारखण्ड (ख) 16 प्रतिशत (ग) पंजाब (घ) 65.38
2. राष्ट्रीय साक्षरता मिशन, सर्वशिक्षा अभियान
3. केरल

पाठान्त प्रश्नों के संकेत

1. आयु संरचना की स्थानीय एवं सामयिक संरचना, जनसंख्या का ग्रामीण एवं नगरीय अनुपात तथा लिंग अनुपात, संक्षिप्त वर्णन लिखिये। (अधिक जानकारी के लिए अनुच्छेद 27.3. 27.1 एवं 27.2 देखिए)
2. अनुच्छेद 27.7 देखिए।
3. लिंग अनुपात का प्रतिकूल होना या घटना आधारित है स्त्रियों में प्रजनन के समय अकाल मृत्यु, बालिका शिशु मृत्यु दर की अधिकता, धार्मिक–सामाजिक मान्यताएं जिसके तहत पुरुषों, पुरुष–बालकों को प्राथमिकता का दर्जा दिया जाना इत्यादि।

टिप्पणी

4. अनुच्छेद 27.6 (ख) देखिए।

5. अनुच्छेद 27.4 देखिए।

चिंतन के बिन्दु

किशोरावस्था (उम्र 10-19 वर्ष)

एडोलसेन्स अंग्रेजी शब्द जिसका अर्थ 'किशोरावस्था' है की उत्पत्ति लैटिन भाषा से हुई है, जिसका आशय ''बढ़ती परिपक्वता पाना'' है। इस सन्दर्भ में किशोरावस्था एक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा समाज में सक्रिय भागीदारी के लिए आवश्यक व्यवहार या प्रवृति को प्राप्त किया जाता है। इसका उम्र से उतना अधिक संबंध नहीं है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने किशोरावस्था की आयु सीमा 10 वर्ष से 19 वर्ष के बीच तय की है। इसकी विशेषता उनमें होने वाले शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक परिवर्तन हैं। भारत की जनगणना 2001 के अनुसार 10-19 वर्षों के बीच किशोरों की संख्या देश की कुल जनसंख्या का 21.8 प्रतिशत है।